परास्नातक संस्कृत कार्यक्रम (एम.ए.संस्कृत)
(एम.एस.के.–12)

सत्रीय कार्य (Assignment)

(जुलाई, 2026 एवं जनवरी, 2027 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : **MSK-12**
धर्मशास्त्र एवं पुराणोतिहास

ignou
THE PEOPLE'S UNIVERSITY

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

परास्नातक संस्कृत कार्यक्रम (एम.ए.संस्कृत)
(एम.एस.के.–12)

धर्मशास्त्र एवं पुराणोतिहास
सत्रीय कार्य (2026–27)

पाठ्यक्रम कोड : MSK-12/2026-27

प्रिय छात्रों/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य है, इसके लिए 100 अंक निर्धारित हैं। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जांच स्तरीय कार्यक्रम का उद्देश्य यह जांचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं, इसी का मूल्यांकन करना इस सत्रीय कार्य का उद्देश्य है, यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है बल्कि अध्ययन के दौरान जो कुछ सिखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। यह उद्देश्य है।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये–

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे प्रदर्शित हैः

अनुक्रमांक :...
नाम :...
पता :...

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :.........................
सत्रीय कार्य कोड :......................................
अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :...................................
दिनांक :..

3) उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का प्रयोग करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
4) प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
5) सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निम्न निर्धारित तिथि तक तवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अन्तिम तिथि :

जुलाई 2026 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2027
जनवरी 2027 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2027

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगाः

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। पुनः इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी महत्वपूर्ण बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास :** अपने उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए तथा प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।
3. यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :
   क) आपका उत्तर तार्किक एवं क्रमबद्ध हो।
   ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्टता हो।
   ग) दिया गया उत्तर आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
   घ) कोई भी उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक न हो।
   ङ.) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों।
4. **प्रस्तुतिः** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएं, तो उसको साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
5. **विशेषः** अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ!

नोट : विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं होगी।

सत्रीय कार्य
MSK– 12 : धर्मशास्त्र एवं पुराणोतिहास
2026–2027

पाठ्यक्रम कोड – MSK–12
पाठ्यक्रम शीर्षक – : धर्मशास्त्र एवं पुराणोतिहास
सत्रीय कार्य – MSK– 12/TMA/2026–2027

पूर्णांक – 100

नोट : यह सत्रीय कार्य 02 खण्डों में विभक्त है। सभी खण्ड अनिवार्य हैं। 15 अंक प्रश्नों का विस्तृत उत्तर दीजिए। 10 अंक के प्रश्नों का लगभग आठ सौ शब्दों में उत्तर देना है।

खण्ड–1

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए: **4X15=60**

1. धर्म शब्द की उत्पत्ति और व्युत्पत्ति का वर्णन करते हुए धर्म के स्वरूप का विस्तारपर्वूक वर्णन करें।
2. धर्मसूत्रों की परंपरा पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालें।
3. धर्मशास्त्रीय ग्रंथों में प्रतिपादित सामाजिक संस्थाओं पर प्रकाश डालें।
4. अष्टादश पुराणों के प्रतिपाद्य और विषयवस्तु को स्पष्ट करें।
5. रामायणकालीन संस्कृति का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
6. महाभारत का परिचय देते हुए उसके आख्यानों का विस्तृत वर्णन करें।

खण्ड–2

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए: **4X10=40**

7. पुराणों का ऐतिहासिक महत्व स्पष्ट करें।
8. याज्ञवल्क्य समिति के व्यवहाराध्याय की विषयवस्तु को स्पष्ट करें।
9. कौटिल्य अर्थशास्त्र की विषयवस्तु की विवेचना कीजिए।
10. रामायण की ऐतिहासिकता को स्पष्ट करें।
11. महाभारत की उपजीव्यता पर प्रकाश डालें।
12. पुराणिक सृष्टि विज्ञान पर प्रकाश डालें।